ISSN: 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 8, सेमिनार विशेषांक, नवंबर 2019

एकल तबला वादन प्रस्तुतिः परंपरागत प्रणाली एवं नवीन परिवर्तन

सचिन कचोटे
शोधार्थी, संगीत विभाग, द महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय
वड़ोदरा

Paper recieved on : Aug 08, 2019, Aug 27, 2019, Accepted : Sep 28, 2019

सार-संक्षेप

भारतीय संगीत में वाद्य वर्गीकरण के अंतर्गत तबला यह वाद्य 'अवनद्ध वाद्य' के श्रेणी में आता है। तालवाद्य—तबला प्रमुखतः, साथ संगत के वाद्य के रूप में जाना जाता था और यहीं तबले की प्रमुख उपयोगिता भी थी। इस प्रकार, 'साथ संगत का वाद्य', यहीं तबले की प्राथमिक पहचान थी। लेकिन, वर्तमान में तबला में हुए नवनवीन शोध व प्रयोग तथा तबले का कलात्मक दृष्टिकोण से हुआ विकास ही तबले की प्रगति की प्रमुख वजह बन गई। इस प्रकार, तबले का सर्वांगीण विकास हुआ और इसी के फलस्वरूप तबले के इस विकास यात्रा का आधुनिक रूप हुआ—'स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत होनेवाला प्रमुख तालवाद्य यानी एकल तबला वादन प्रस्तुति।' प्रस्तुत शोध-पत्र के अंतर्गत हम 'एकल तबला वादन प्रस्तुति' के बारे में, 'परंपरागत तथा नवीन परिवर्तन' दोनों पक्षो से विस्तृत चर्चा करेंगे। स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत होनेवाले इस प्रमुख तालवाद्य-तबला के प्रभावी प्रस्तुति के तत्वों पर प्रकाश डालना, यह भी इस शोध-प्रपत्र के माध्यम से मेरा प्रयास है। साथ ही, 'तबले का रियाज एवं प्रस्तुति' इनके परस्पर संबंध के बारे में चर्चा करना, यह भी इस शोध प्रपत्र का उद्देश्य है। प्रस्तुत, शोध प्रपत्र में मैंने तबला वादन की पारंपारिक तथा वर्तमान प्रस्तुति के तुलनात्मक एवं विकसनशील तत्वों का सविस्तार वर्णन किया है। साथ ही, इस सर्वश्रेष्ठ तालवाद्य की वादन प्रस्तुति उतनी ही श्रेष्ठतम किस प्रकार हो सकती हैं? इसके बारे में भी मैंने मेरे विचार और अनुभव रखे है, जिससे तबला साधकों को जरूर लाभ होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। इस प्रकार, प्रस्तुत शोध पत्र के परिचय का परामर्श लेकर इस मुख्य घटक के अंतर्गत अन्य संबंधित तत्वों का दिग्दर्शन करना, यह इस शोध-विषय का प्रमुख उद्देश्य है। प्रस्तुत शोधपत्र को लिखने के लिए माध्यमिक स्त्रोतों के अन्तर्गत गुरुजन-विद्वानों के विचार तथा विविध ग्रन्थों का आधार लिया गया है।

मुख्य शब्द : एकल तबला वादन, रियाज़, पेशकार, कायदा, पढंत, मुरक्का, तिहाई, परंपरागत वादन, नवीन परिवर्तन

शोध-पत्र

भारतीय संगीत के सर्वश्रेष्ठ तालवाद्य 'तबला' की सबसे बड़ी उपलब्धि है, 'स्वतंत्र यानी एकल तबला वादन प्रस्तुति'। इस वाद्य ने अपनी 'बनावट तथा बाज' के आधार पर अपना कलात्मक विकास साधते हुए एकल वादन प्रस्तुति के रूप में अपनी विशेष पहचान बना ली है। यहीं इस तालवाद्य की सर्वश्रेष्ठता है, ऐसा कहना उचित होगा। संगीत क्षेत्र में अपना एक अलग अस्तिव तथा महत्त्व प्राप्त करते हुए तबलावाद्य ने दिन ब दिन अपनी प्रगति करके वर्तमान में स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत होने वाले प्रमुख तालवाद्य के रूप में गौरव प्राप्त किया है। तबले के इस सर्वांगीण विकास में विद्वानों द्वारा ली गई अथक मेहनत तथा उनका सर्वोपरि योगदान, कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आज, संगीत कला में कोई भी कल्पना बगैर तबला के, केवल नामुमकीन है। अर्थात, इस तालवाद्य की सर्वगुण संपन्नता में 'तबले के रियाज़' का भी अनन्य साधारण महत्त्व है। विद्वानों ने अपने अथक रियाज़ से तबले की कलात्मकता को और भी सौंदर्यपूर्ण बना दिया है। सचमुच, तबले का यह 'सर्वांगीण विकास' है, इसमें कोई भी शंका नहीं।

संगीत कला की कोई भी विधा-गायन, वादन तथा नृत्य, और तबले का बड़ा ही गहरा तथा परस्परपूरक संबंध है। तबला वाद्य, संगीत कला की परिपूर्णता बन चुका है। वर्तमान में, संगीत विधा की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्णरूपेण पूर्ति इस ताल वाद्य ने जिम्मेदारी के साथ बाखूबी निभायी है। संगीत प्रकारों में तालवाद्य से अपेक्षित हर अपेक्षाओं की निश्चित रूप से पूर्ति इस वाद्य—'तबला' ने की है। तबले की 'सर्वगुण संपन्नता' ही इसका प्रमुख कारण है। तबले पर बजनेवाले बाज-खुला बाज तथा बंद बाज और उससे निर्माण होने वाले तबले के असंख्य बोल, बोलसमूह एवं रचना प्रकारों ने तबले के साहित्य को समृद्ध बना दिया है। रचना प्रकारों में आए हुए विविध नादाक्षर तथा उनसे हुई नाद निर्मिती संगीतोपयोगी होती

है। उसी तरह तबला (दायाँ) और डग्गा (बायाँ) की बनावट के कारण दोनों पर किए गए संयुक्त आघात के सुंदर मिलाफ से एक प्रकार के सुखद, आनंददायी नाद का अनुभव मिलता है। तबला यह विविध लकड़ी के खोड से तथा डग्गा यह विविध धातू से बनाया जाता है, इस प्रकार दायाँ-बायाँ के निर्माण में किया गया यह मूलरूप का अलगपन ही एक संगीतोपयोगी नाद का द्योतक बन गया। इस प्रकार, तबले की यह सर्वगुणरूपेण साकारता ही उसके प्रगति की प्रमुख वजह बन गई और क्रमशः प्रगति पथ पर अपना सर्वांगीण तथा कलात्मक विकास साधते हुए तबले ने अपने उत्कर्ष की चरम सीमा प्राप्त की और इन सभी का आधुनिक तथा विकसनशील रूप हुआ—'स्वतंत्र तथा एकल तबला वादन प्रस्तुति'।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की अभिजात परंपरा को दर्शानेवाली तबला वादन कला की परंपरा भी विकसित होने लगी। तबले के विविध घरानों द्वारा यह परंपरा और भी समृद्ध हुई। तबले के छह घराने—दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रूखाबाद, बनारस और पंजाब, यानी तबला वादन की सौंदर्य की ओर देखने के छह अलग-अलग दृष्टिकोण बनें। इन घरानों के विद्वानों ने अपनी-अपनी वादनशैली से उन घरानों को और भी सराहा, विकसनशील तथा साहित्य संपन्न बनाया और एकल तबला वादन को सर्वगुणसंपन्न विशाल आकार प्रदान किया। इस प्रकार, एकल तबला वादन को सर्वोच्चस्थान प्राप्त कराने हेतू तबले का 'बाज तथा घरानो' की बड़ी ही एहम् भूमिका रहीं। विद्वानों ने अपनी विचार प्रणाली से एकल तबला वादन प्रस्तुति को एक नयी दिशा दी और एक नया वादन प्रवाह दिया। तबले के इस वादन विकास में शास्त्रीय तथा घरंदाज पद्धति से परिपूर्ण इन विविध घरानों का स्थान बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। तत्कालीन विद्वानों ने घरानेदार एवं परंपरागत वादन विकास कौशल्य से एकल तबला वादन के स्थान और महत्त्व को और भी अग्रसर बना दिया। खानदानी परंपरा से मिली तबले की 'शिक्षा' तथा उससे मिला 'वादन संस्कार' ही एकल तबला वादन प्रस्तुति की 'परंपरागत प्रणाली' की नींव बनी। परंपरा से प्राप्त इस वादन प्रस्तुति ने अपना एक अलग ही अस्तित्व तथा श्रेष्ठत्व, तबला जगत को दिया। इसे ही, एकल तबला वादन प्रस्तुति की 'परंपरागत प्रणाली' कहना योग्य होगा।

परंपरागत प्रणालीः

'संगीत' यह गुरुमुखी विद्या है, जो परंपरा से योग्य गुरुद्वारा शिष्य को मिलती है। तबले के विविध घराने, इसी गुरुमुखी परंपरा के उत्तम उदाहरण है। इन सभी घरानों के विद्वान-गुरुजनों ने यह प्रणाली कायम रखी है। विशेषतः एकल तबला वादन के अंतर्गत परंपरागत प्रणाली का बड़ा महत्त्व है। इसका बड़ा ही पूरक परिणाम वर्तमान वादन प्रस्तुति पर होता हुआ दिखायी दे रहा है, जो काफी प्रभावी सिद्ध हुआ है। विद्वानों ने अपने-अपने घरानों के अनुशासन में रहकर अपनी वादनशैली से प्रामाणिक रहते हुए अपने विचार रखे है और तबला वादन प्रस्तुति का आदर्श सामने रखा है। तत्कालीन विद्वान अपनी वादनशैली और घरानों से एकनिष्ठ थे तथा उनका वादन उस घराने के अनुरूप ही रहता था, ये विशेषता थी। अपने घरानों का प्रतिनिधित्व करते हुए वादक अपनी ही वादनशैली बजाना पसंद करते थे, दूसरे घरानों का वादन केवल सुना जाता था लेकिन उसका वादन में स्वागत होता हुआ, अक्सर नहीं दिखायी देता था। इसे, वादकों का अपने घराने के प्रति 'स्वाभिमान और सन्मान' कहना उचित होगा। इसी आधारपर आगे हम, परंपरागत एकल तबला वादन प्रस्तुति की चर्चा करेंगे।

एकल तबला वादन की शुरुआत 'पेशकार' से करने के रिवाज का स्वागत लगभग सभी घरानों के विद्वान वादकों ने किया। सभी घरानों के विद्वानों ने पेशकार प्रस्तुति में अपने-अपने विचार रखें और एकल तबला वादन की इस आरंभ प्रस्तुति में एक अलग ही रंग भरा। विशेष तौर पर, दिल्ली और फर्रूखाबाद घरानों के विद्वानों ने पेशकार का समृद्ध विचार तबला जगत को दिया, जो एक आदर्श बन गया। फर्रूखाबाद घराने के उस्ताद अहमदजान थिरकवाँ खाँ साहब ने धींऽऽक्ड धींऽधाऽ... पेशकार इतना लोकप्रिय और मशहूर कर दिया जिससे पेशकार, फर्रूखाबाद की विशेष पहचान बन गई। अर्थात, खाँ साहब ने अपने रियाजी तथा विद्वत्ता प्रचुर वादन से एकल तबला वादन का यह महत्त्वपूर्ण अंग-पेशकार कलात्मक तथा अधिक सौंदर्यपूर्ण बना दिया। उधर, दिल्ली के वादक कलाकारों ने बराबर लय में—धाऽऽक्ड धाऽतिर किटधाऽ तीत्धाऽ... चतुःस्त्र जाती के पेशकार वादन प्रस्तुति से अपनी अलग पहचान बताई। लखनऊ, बनारस, अजराड़ा घरानों के वादकों ने पेशकार की अपेक्षा कायदा-रेला जैसी विस्तारक्षम रचनाओं के वादन में अपनी प्रस्तुति की पसंदी दर्शाई। लखनऊ, बनारस घराने, जो पखावज वादन से काफी प्रभावित थे, उन्होंने खुले बाज का स्वीकार करते हुए 'उठान' से एकल तबला वादन की शुरुआत की और अपने प्रस्तुति का अलग स्वरूप तबला जगत में दिखाया। बनारस के वादकों ने ठेके के बोलों के आधार से पेशकार की बढ़त की और इस प्रकार अपने एकल वादन का प्रारंभ किया, जिसे, 'औचार' कहा जाता है। बनारस घराने का यह एक प्रारंभिक वादन का अलग अंदाज, जो उस घराने की अलग और विशेष पहचान बन गई। सभी वादन शैली से पूर्णतः मुक्त और खुले बाज का स्वीकार करने वाले पंजाब घरानों के विद्वानों ने एकल तबला वादन प्रस्तुति में पेशकार का सूक्ष्म विचार रखा। सूक्ष्म लय-लयकारी के विविध दर्जो से पेशकार को और भी सौंदर्यपूर्ण बना कर उसका महत्त्व भी बढ़ाया, जिसका संपूर्ण श्रेय उस्ताद अल्लार खाँ साहब को जाता है। इस प्रकार—'पेशकार' वादन प्रत्येक घरानों की एकल तबला वादन प्रस्तुति की एक विशेष पहचान बन गई।

पेशकार वादन के साथ-साथ कायदा, रेला जैसी विस्तारक्षम रचनाओं की विपुलता, यह प्रत्येक घरानों की वादन प्रस्तुति की विशेषता बन गई। सौंदर्यात्मक बोलों के आधार से निर्मित घरानेदार कायदे, रेले तथा उनका प्रस्तार विधी याने कायदा, रेला खोलने की पद्धति इत्यादि बाते उन घरानों की वादन विशेषता बन गई। दिल्ली, अजराडा, फर्रूखाबाद, पंजाब घरानों के वादकों ने विस्तारक्षम रचनाओं की निर्मिति की और उतनी ही प्रभावशाली वादन प्रस्तुति भी की। उधर, लखनऊ और बनारस ने विस्तारक्षम रचनाओं की अपेक्षा पूर्वसंकल्पित रचनाएँ जैसे, उठान, गततोडे, परन, टुकड़े इत्यादि रचना प्रकारों पर विशेष जोर देते हुए अपने वादन की

अलग ही श्रेष्ठता दिखायी। 'गत' फर्रूखाबाद घराने का महत्त्वपूर्ण वादन सौंदर्य हैं। इस सन्दर्भ में सुधीर मईणकर का कथन है—''फर्रूखाबाद घराने के खलिफा उस्ताद अमीर हुसेन खाँ साहब केवल गत-टुकड़ो को निरंतर दो-दो घंटे सुनाकर श्रोताओं को मुग्ध करते थे। वे अपने तबले में विपुल एवं समृद्ध भाषा का उपयोग अत्यंत प्रभावात्मकता के साथ किया करते थे।''[1] इन सभी बातों का सारासार विचार देखा जाएँ तो हम इस नतीजे पर पहुँचते है कि, परंपरागत एकल तबला वादन प्रस्तुति प्रणाली के अंतर्गत वादक कलाकार अपने घरानों तथा गुरुजनों से एकनिष्ठ रहकर ही अपनी प्रभावी वादन प्रस्तुति करते थे और इसी में उन्हें अधिक रुचि महसूस होती थी। इस प्रकार, परंपरागत प्रणाली के अंतर्गत विद्वानों ने एकल तबला वादन का एक विशेष आदर्श तबला जगत को दिया है, जो भविष्य में सदा चिरस्मरणीय एवं चिरंतन रहेगा।

नवीन परिवर्तन:

स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत होनेवाला एक प्रमुख तालवाद्य, ऐसा सन्मान प्राप्त किए तबला इस वाद्य ने परंपरा से मिली अपनी वादन प्रस्तुति में क्रमश: विकास किया। वर्तमानकालीन विद्वानों ने और भी सूक्ष्म विचार एवं चिंतन से एकल तबला वादन प्रस्तुति को एक नया स्वरूप दिया, जो अभ्यासपूर्ण तथा विचारपूर्ण सिद्ध हुआ। वर्तमान में, वादक अपने घरानों से एकनिष्ठ रहकर वादन करना पसंद करते है, साथ ही अन्य घरानों की वादनशैली भी आत्मसात कर आत्मविश्वास से प्रस्तुत करते हुए दिखायी दे रहे है। इसी के फलस्वरूप, वर्तमान में एकल तबला वादन प्रस्तुति का स्तर काफी बढ़ गया है तथा एकलवादन प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। वादन में आए नवीन परिवर्तन के अंतर्गत आगे हम, प्रभावशाली एकल तबला वादन प्रस्तुति के कुछ प्रमुख तत्वों की चर्चा करेंगे। लेकिन, इस चर्चा के पूर्व, एक बात जो महत्त्वपूर्ण है, उस पर थोड़ा प्रकाश डालेंगे, वो है 'रियाज़' बगैर 'रियाज़' के प्रभावशाली वादन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। तबला वादन में रियाज़ का अनन्य साधारण महत्त्व है। 'रियाज़ और वादन की प्रभावी प्रस्तुति' इनका बड़ा ही पूरक संबंध है।

स्वतंत्र तबला वादन के पारंपारिक वादन पद्धति तथा रियाज़ के बारे में ज्येष्ठ विचारवंत तथा तबला गुरु पं. अरविंदजी मुलगाँवकर इनसे लिए गए पूर्व साक्षात्कार में वे अपने विचार रखते हुए कहते हैं—''तबले की पारंपारिक रचना तथा उनका रियाज़ बहुत ही महत्त्वपूर्ण है और इसका वादक के वादन प्रस्तुति पर बड़ा ही पूरक परिणाम होता हुआ दिखाई देता है। सुबह का समय रियाज़ के लिए सर्वोत्कृष्ट समय है। वादक ने प्रथमत: बोल पंक्तियों का, जिसमें 'तीट', 'तिरकिट', 'धिडनग', 'धिनगिन' इत्यादि का बराबर लय में रियाज़ करना चाहिए। अविस्तारक्षम रचानाओं के लिए वादक ने 'मुरक्को' का रियाज़ करना आवश्यक है। वादन प्रस्तुति में तबले के उस्तादों ने मुरक्का वादन से अपना एक अलग ही प्रभाव दिखाया है। तबले पर दरी डालकर रियाज़ करना, यह मेरे विचार से रियाज़ की आदर्श पद्धति है। अरविंद मुलगांवकर एक साक्षात्कार में बताते हैं—''उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब अक्सर कहते थे कि—'कठिन बोलों का रियाज़ ही सही रियाज़ होता है'। मेरे खयाल से वादक ने अपनी प्रभावी प्रस्तुति हेतू तबले की पारंपारिक रचनाओं को प्रधानता तथा महत्त्व देते हुए, रियाज़ करना चाहिए, जिससे वादक को काफी लाभ हो सकता है। इस प्रकार, तबले की पारंपारिक वादन रचना तथा उनके रियाज़ का बड़ा ही गहरा तथा परस्परपूरक संबंध है, ऐसा मेरा विचार हैं।''[2]

शारीरिक रियाज़ के साथ-साथ बुद्धि कौशल्य यानी बौद्धिक रियाज़ भी महत्त्वपूर्ण है। 'बुद्धिबल और रियाज़' के योग्य संतुलन से ही एक उत्तम वादक बनना संभव हो पाता है। इसलिए, विद्वानों ने क्रियात्मक रियाज़ के साथ-साथ सैद्धांतिक रियाज़ को भी महत्त्व दिया है। आमोद देगड़े के कथानुसार—''रियाज़ के सैद्धांतिक पक्ष को देखते हुए वादक ने तबला तथा उससे संबंधित सभी तत्वों का सूक्ष्म विचार करना आवश्यक है, जैसे—तालशास्त्र, घराणों का अभ्यास और स्वतंत्र तबला वादन के सभी संकल्पनाओं का सूक्ष्म अध्ययन।''[3] रियाज़ के इस मूलभूत सत्य के आधार पर ही वर्तमान में, एक कुशल तबला वादक अपना तबला वादन कौशल्यपूर्ण तथा परिणामकारक करता हुआ दिखाई देता है, जो वादन प्रस्तुति का नवीन परिवर्तन है। वादन प्रस्तुति परिणामकारक करने हेतू विद्वान कलाकारों ने प्रमुख तत्वों का सूक्ष्म विचार तथा चिंतन किया है और एकल तबला वादन को सर्वांगीण दृष्टि से विशाल, व्यापक और प्रभावी सिद्ध कर दिया है। इसे ही एकल तबला वादन की 'आधुनिक प्रणाली' कहना उचित होगा, ऐसा मेरा विचार है। प्रभावी एकल तबला वादन प्रस्तुति में नवीन परिवर्तन के अंतर्गत निम्नलिखित प्रमुख माध्यमों का तथा तत्वों का विचार होना जरूरी है, ऐसा मेरा मानना है।

ठेका वादन:

संगीत का प्राणतत्व है 'लय'। तबला यह 'लयतत्व' तालवाद्य है। एकल तबला वादन प्रभावी होने हेतू, प्रथमत: ठेका वादन उतना ही आसदार, लयदार तथा वजनदार होना, यह मूलभूत आवश्यकता होती है। एकल तबला वादन प्रस्तुति में 'नगमा तथा नगमावादक' की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। संपूर्ण एकल वादन में 'ठेका वादन' ही वादक कलाकार के नगमावादक की भूमिका निभाता है, ऐसा एक विचार है। इससे ही ठेका वादन का महत्त्व समझ में आता है। कोई भी रचना प्रकार के वादन पूर्व, ठेका वादन लयदार होना अपेक्षित होता है। ठेका वादन से ही वादक की हाथो की तैयारी, वजन तथा रियाज़ की पहचान हो जाती है, जो गुणीजनों के नजर से नहीं छिपती। यहाँ पर वादक को 'दाद' मिलती ही है। कहते हैं, कोई भी कार्य-कृति की शुरुआत अच्छी हो तो उसकी संपूर्ण क्रिया तथा अंत भी अच्छा यानी शुभ ही होता है। मेरे खयाल से, एकल वादन प्रस्तुति में प्रारंभिक ठेका वादन के प्रभावी तथा असरदार शुरुआत से ही संपूर्ण वादन यशस्वी होने का मार्ग खुल जाता है। ठेका वादन नगमे का काम करता है, ऐसा मैंने पहले कहा। इस प्रकार, नगमावादक का महत्त्व भी समझ में आता है। नगमावादक लय का पक्का होना चाहिए। उसका वादन लयदार होना जरूरी होता है, जिससे वादक की प्रत्येक रचना प्रस्तुति को सच्चा न्याय मिल पाता है। इसलिए, लयदार नगमावादक का चयन, यह प्रमुख वादक कलाकार का एक महत्त्वपूर्ण कर्तव्य तथा उसके वादन प्रस्तुति का एहम् हिस्सा होता है। तबलावादक नगमे से

मिली बराबर लय के आधारपर छोटी एवं आकर्षक तिहाई लेकर सम से ठेके का आवर्तन शुरू करता हुआ अपने वादन का समा बाँधना शुरू करता है। यहाँ पर नगमे से प्राप्त लय के पोषक वातावरण में, सौंदर्यपूर्ण शुरुआत ही, वादक की आगे की वादन क्रिया का शुभ संकेत देती है। अपना वादन परिणामकारक करने हेतू प्रारंभ की तिहाई वादन का यह सूक्ष्म तथा सौंदर्यपूर्ण संस्कार तथा विचार ही इस परिवर्तन की नवीनता है, इसमें कोई शंका नहीं। वादक अपने शुद्ध ठेका वादन से नगमे से प्राप्त लय पर अपनी पकड़ मजबूत करते हुए, लय से एकरूप होकर वादन क्रिया की धीरे-धीरे बढ़त करता हुआ 'पेशकार' का पहला आवर्तन शुरू करता है।

पेशकार वादनः

ठेके के साथ-साथ पेशकार की आत्मविश्वासपूर्ण शुरुआत ही वादक का अपना पहला प्रभाव होता है। लय अंग तथा उपज अंग से धीरे-धीरे पेशकार वादन के आवर्तनों के साथ वादक का विचार झलकना शुरू होता है। और इसी के साथ ही, वादक के वादन क्रिया का अब तक किया हुआ सफर प्रशस्त होता दिखाई देता है। वर्तमान में, वादक कलाकारों द्वारा पेशकार प्रस्तुति काफी परिणामकारक तथा प्रभावी होती हुई दिखाई देती है। विद्वानों का कहना है, 'पेशकार वादन से वादक का बुद्धि कौशल्य दिखाई देता है'। पेशकार वादन प्रस्तुति में 'लघु' का विचार रखते हुए 'लघु का पेशकार वादन' यह नवीन परिवर्तन की सबसे बड़ी उपलब्धि है, ऐसा मेरा मत है। इन सभी तत्वों का सूक्ष्म विचार तथा चिंतन करते हुए, उपज अंग से पेशकार के प्रस्तार का आदर्श, वर्तमान में, हमारे सामने है। और एक बात, वादक का स्वभाव और विचार उसके वादन में प्रतिबिंबित होते है। इस प्रकार, आरंभ के इस प्रभावी वादन क्रिया से ही वादक के सांगीतिक व्यक्तित्व की प्रतिभा का परिचय मिल जाता है। साथ ही, पेशकार वादन प्रस्तुति से वादक के दायाँ-बायाँ का वजन, हाथों का रखाव तथा वजन, सौंदर्य और नज़ाकतपूर्ण वादन, लय-लयकारी, लघुविचार तथा लय अंग विचार इत्यादि तत्वों का प्रदर्शन होता है। गुणी तबला वादक के यह अच्छे लक्षण बताए गए हैं। और एक महत्त्वपूर्ण बात, ऐसे तैयारी के साथ वादन के प्रस्तुति के लिए अपना वाद्य भी उतना ही उत्कृष्ट होना जरूरी होता है। इस सन्दर्भ में अरविंद मुलगांवकर कहते हैं—''उत्तम तबले पर किए गए आघात से ही अपेक्षित नाद उत्पन्न हो पाते है, इसलिए रियाज के साथ-साथ अपनी प्रभावी प्रस्तुति के लिए उत्तम वाद्य होना और भी जरूरी होता है।''[4] वादन परिणामकारक होने हेतू अच्छी बनावट और सुरीले वाद्य का चुनाव, यह एक प्रमुख माध्यम होता है।

कायदा वादन

पेशकार वादन के अस्मितापूर्ण वादन का परिचय देने के बाद वादक अपनी प्रस्तुति में आगे, कायदे की ओर तैयारी तथा आत्मविश्वास से बढ़ता है। कायदे से वादक की 'हाथ तैयारी' का परिचय मिलता है। विभिन्न बोलों के आधार पर विद्वानों ने अगणित कायदों की रचना की है। कायदे के 'मुख' में आए प्रमुख बोलों पर अधिकार पाने की नजर कायदे के रियाज़ से मिलती है। जैसे धातीटधातीट...का कायदा 'तीट' इस बोल के जरिए इस कायदे को देखने की नजर देता है। वैसे ही 'धाऽत्रक धींनागिना... इस कायदे में 'त्रक' बोल के जरिए उस कायदे को देखने का दृष्टिकोण मिलता है। 'कायदा' जैसी विस्तारक्षम रचना के वादन प्रस्तुति में वादक का रियाज़ तथा हाथ तैयारी सामने आती है। कायदे की शुरुआत, 'मुख' बराबर लय में वजनदार तरीके से बजाते हुए होती है। उसके बाद सीधे दुगुन न बजाते हुए, वादक 'लयकारी' का उपयोग कायदा वादन में करता हुआ दिखाई देता है। जैसे—मुख को 'दीड़ी' लयकारी में बजाकर उसी में एक छोटी तथा आकर्षक तिहाई लेकर वादक फिर बराबर लय में, नियोजित स्थान यानी सम पर आता है। इस तरह, वादन प्रस्तुति की एक अलग ही सौंदर्य अनुभूति श्रोतागण को मिलती है, जो सुखद और आनंददायी होती हैं। योग्य गुरु द्वारा प्राप्त अच्छी तालीम के जरिए, पात्र शिष्य ही ऐसा सुखद अनुभव देने में सक्षम होता है। यह एक संस्कारशील वादन का लक्षण होता है। वर्तमान में, कायदे के ऐसे सौंदर्यपूर्ण प्रस्तुति का स्वागत होता हुआ दिखाई दे रहा है। परंपरागत, घरानेदार कायदों का जब इस तरह सौंदर्यपूर्ण पद्धति से वादन होता है तब वादक के वादन प्रस्तुति में चार-चाँद लग जाते है, यह निःसंशय हैं। कायदा-वादन का यह नवविचार वर्तमान विद्वानों की एक विशेष देन है।

तबले की घरानेदार वादन पद्धति और उसमें आवश्यक परिवर्तन पर अपने महत्त्वपूर्ण विचार रखते हुए ज्येष्ठ विचारवंत और तबला गुरु पं. सुधीर माईणकरजी अपने साक्षात्कार में कहते हैं—''पारंपारिक कायदा वादन में विस्तार करते समय शब्द-अक्षरों की बजाय कायदे का साहित्य की दृष्टि से विचार होना चाहिए, जैसे धाती धागेना धातिरकिट ..... इस कायदे में इन तीन बोल समूहों का विचार अलग से होना चाहिए और उस अनुसार कायदे का विस्तार होना चाहिए। केवल 'नधातिरकिट' जोड़कर पलटा करना उचित तथा सौंदर्यपूर्ण नहीं होगा क्योंकि 'नधातिरकिट' यह शब्द नहीं है, वह केवल अक्षर है। यह रचना दिल्ली घराने की विशेषता है, इसलिए इस परंपरागत वादन पद्धति में वादक कलाकार की वैचारिकता झलकनी चाहिए, जिससे कुछ नयापन लगे। मेरे विचार से, तबले के घरानों की वादन पद्धति में वादक कलाकार की 'वादन विचार कृति' में ही उसका व्यक्तित्व प्रतिबिंबित होता है, जो महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान में, वादन पद्धति में हाथ का रखाव तथा वादन शैली के साथ-साथ वादक का अपना विचार भी बहुत जरूरी है, नहीं तो वह केवल शिक्षण ही रह जाएगा।''[5]

रेला वादनः

रेला वादन से वादक की 'गतिमानता' तथा उसके 'दमसास' का परिचय मिलता है। एकल तबला वादन प्रस्तुति में वादक कलाकार के यह विशेष गुण बताए गए है। लय अंग तथा विचार आवृत्ति से पेशकार-वादन, शुद्ध निकास तथा तैयारी के साथ कायदा-वादन और स्पष्टता के साथ-साथ द्रुतगति में रेले का कौशल्यपूर्ण वादन, ये सभी वादन प्रस्तुतियाँ वादक के वादन को कलात्मक बना देती है, ऐसा मेरा विचार है। वादन कलात्मक तथा कौशल्यपूर्ण होना महत्त्वपूर्ण होता है। इसी दिशा में शोधार्थी का अनुभव है कि रेला-वादन यह एकल तबला वादन प्रस्तुति

प्रभावशाली बनाने का एक महत्त्वपूर्ण विस्तारक्षम रचना प्रकार है। रेला वादन से, 'धीर धीर', 'घिडनग', 'दिनतक', 'धातीगिन', 'धीनगिन', 'तिरकिट तिरकिट', दो ऊँगलियों का 'धीरधीर', इत्यादि अनेक कष्टप्राय बोलों पर वादक ने किया हुआ रियाज़ तथा उसके हाथों की सहजता का पता चल पाता है। रेले का अथक संपूर्ण वादन, वादक के अखंड रियाज़ की फलश्रुति होती है, इसमें कोई शंका नहीं। वर्तमान में, वादक कलाकारों ने रेला वादन में गतिमानता के साथ-साथ सौंदर्यपूर्ण वादन आविष्कार का सुंदर संयोग किया है, जो परिणामकारक एवं नवीन है। उसी तरह वर्तमान में, वादको द्वारा विविध जाती के पेशकार, कायदे तथा रेलों का प्रभावात्मक वादन होता हुआ दिखाई हे रहा है, यह नवीनता है।

पूर्व संकल्पित रचना:

एकल तबला वादन प्रस्तुति की यह नवीनता, वर्तमान में काफी प्रभावी सिद्ध हुई है। संगीत यह प्रयोगशील कला है। विद्वानों ने अपने वादन में इस परिणामकारक प्रयोगशीलता से एकल तबला वादन को एक नया स्वरूप प्रदान किया है। एकल तबला वादन में वादक अपनी लय की गती का आलेख, हमेशा बढ़ता हुआ रखता है, और यही एक आदर्श वादन पद्धति की पहचान भी होती है। पेशकार, कायदा, रेला, रौ इत्यादि रचना प्रकारों की प्रस्तुति के उपरांत वादक धीरे-धीरे मध्यलय और फिर द्रुतलय की और बढ़ता हुआ पूर्वसंकल्पित रचनाओं की प्रस्तुति शुरू करता है। इस दौरान बंदिशे, गतटुकड़े, गत, परन, चक्रदार इत्यादि रचना प्रकारों का स्वतंत्र तथा परिणामकारक आविष्कार होता है। अगर हम, विस्तारक्षम रचनाओं को एकल वादन प्रस्तुति का पूर्वार्ध कहेंगे तो, पूर्वसंकल्पित रचनाओं की प्रस्तुति को वादन का 'उत्तरार्ध' कहना उचित होगा और यही इसका महत्त्व भी है। एकल तबला वादन प्रस्तुति को प्रभावशाली बनाने का और एक प्रभावी तथा महत्त्वपूर्ण माध्यम होता है, 'पूर्वसंकल्पित रचनाओं का वादन'। एकल तबला वादन की अच्छी और प्रभावी समाप्ति के लिए इन पूर्वसंकल्पित रचनाओं का वादन भी उतना ही प्रभावी होना जरूरी होता है क्योंकि ये रचनाएँ, वादन के आखिर में प्रस्तुत की जाती है। अर्थात, ऐसे प्रभावी वादन के लिए पूर्वसंकल्पित रचनाओं का रियाज़ भी उतना ही महत्त्व रखता है। अरविंद मुलगांवकर कहते हैं—''विद्वानों ने कायदा-रेला रचना प्रकारों के लिए रियाज़ की 'चिल्ला पद्धति' तथा गत, गतटुकड़ो के रियाज़ हेतू 'मुरक्का' (महत्त्वपूर्ण पलटा) वादन का महत्त्व बताया है।''[6] रियाज़ की पद्धतियाँ विद्वानों की परंपरागत देन है, जो तबला जगत को मिली है। वर्तमान में भी, विद्वानों द्वारा असंख्य नवनवीन मुरक्को की निर्मिति हो रही है, जो काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। इसी के फलस्वरूप वादन पद्धति का परिणामकारक नया परिवर्तन हमें दिखाई देता है।

यहाँ पर और एक महत्त्वपूर्ण तत्व पर विचार करूँगा, वो है 'तबले की पढ़ंत'। 'पढ़ंत' यानी 'बोलना'। रचना प्रकार कोई भी हो, लेकिन जब वादक कलाकार अपने स्पष्ट वाणी से पढ़ंत करते हुए प्रस्तुति करता है, तब उसके वादन की शोभा देखते ही बनती है। साफ पढ़ंत की गई रचना बहुत ही परिणामकारक सिद्ध होती है। पढ़ंत से उस रचना का सौंदर्य और भी बढ़ जाता है, तथा उस रचना का महत्त्व भी जाना जा सकता है। रचना की बजंत का अंदाज तथा आग़ाज पढ़ंत द्वारा स्पष्ट हो जाता है। मेरे विचार से, पढ़ंत की आचरित कृति होती है बजंत। सुधीर मईणकर कते हैं कि—विद्वानों ने कहा हैं, ''जिनकी ज़ुबान साफ, उनका हाथ साफ़। कहावत का मतलब यही है कि अपनी शारीरिक क्रियाओं का नियंत्रण-केंद्र मस्तिष्क है।''[7] विद्वानों के ये अनुभवपूर्ण विचार ही प्रभावशाली तथा प्रतिभावान वादन की अभिव्यक्ति होती है, ऐसा मेरा मत है। लेकिन इसका स्वअनुभव वादक ने अपनी वादन प्रस्तुति में लेना जरूरी है। इस तरह, प्रभावशाली एकल तबला वादन प्रस्तुति में 'पढ़ंत' का स्थान भी महत्त्वपूर्ण होता है। तबला वादन कला का महत्त्वपूर्ण सौंदर्यतत्व है—'पढ़ंत'।

दि. 16/17 सितंबर 2019 को बड़ौदा में हुई दो दिवसीय राष्ट्रीय तबला कार्यशाला में ज्येष्ठ तबला वादक पं. ओंकार गुलवड़ी जी ने 'स्वतंत्र तबला वादन प्रस्तुति में नवीनता एवं रियाज़' के बारे में पूछे गए मेरे प्रश्न पर अनुमोदन करते हुए कहा कि—

शोधार्थी ने ओंकार गुलवडी का साक्षात्कार लिया था और उन्होंने कहा—''स्वतंत्र तबला वादन प्रस्तुति के पूर्व, विचार होना जरूरी है और विचारपूर्वक रियाज़ होना उससे भी जरूरी है'। रियाज़ करने के पहले रचनाओं की पढंत करना आवश्यक होता है, जिससे वह रचना मस्तिष्क में पक्की बैठ सके। पढंत के वक्त स्वर-व्यंजन के उच्चारों का खयाल रखना जरूरी होता है'। 'पहले पढंत फिर बजंत' इसका आचरण करके वादक ने रियाज़ करना चाहिए, गति के पिछे बिल्कुल न दौड़े। एकगुन में वादक ने दायाँ -बायाँ की मींड पर ध्यान देना जरूरी है। एकपट में बजाई गई 'मींड' ही दुगुन लय में 'गमक' का रूप धारण करती है इसलिए, स्वतंत्र तबला वादन प्रस्तुति में वादक ने इन सूक्ष्म बातों का ध्यान रखते हुए रियाज़ करना चाहिए। उसके बाद, इसी पद्धति से दुगुन में भी रियाज़ करना चाहिए। वादक ने अपने रियाज़ का एक क्रम रखना जरूरी है। दायाँ-बायाँ के संतुलन को ध्यान में रखकर किया गया रियाज़ सर्वदृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है। उधर दूसरी ओर, ठेका वादन में ठेका भरना यानी ठेके में सुरों का लगाव लाना चाहिए। ठेका भरना यानी सुरों का भरना होता है। ताल एक ही होता है मगर तालों के अनेक ठेके बजाए जाते हैं, इसलिए वादक ने ठेकों का रियाज़ करना भी उतना ही जरूरी है, जितना की अन्य रचना प्रकारों का। इसका उपयोग हमें पेशकार की बढ़त में होगा। पेशकार में धीरे-धीरे सुरों के लगाव से 'धीं', 'ना', 'धा', 'धाती', 'तींना', 'धींना', इत्यादि बोलों के साथ आलापी करते हुए उसकी सिलसिलेवार बढ़त करना जरूरी है। इसमें ही, वादक के विचारों की नवीनता दिखाई देगी। पेशकार में हर खंड में वादक का नवीन विचार झलकना चाहिए। कायदे-रेलों का खाली-भरी तत्वों से और पेशकार का स्वतंत्र रूप से तथा लय अंग से विचार और विस्तार होना महत्त्वपूर्ण है। इसलिए, तबला वादक को तबले की विविध संकल्पनाओं का विचारपूर्वक तथा अभ्यासु वृत्ति से रियाज़ करना चाहिए, जिसका बड़ा ही पूरक परिणाम उसके वादन प्रस्तुति पर निश्चित रूप से होगा, ऐसा मेरा विचार हैं।''[8]

एकल तबला वादन प्रस्तुति के इस नवीन परिवर्तन की चर्चा में, मैं तबला वादन के एक और महत्त्वपूर्ण सौंदर्यतत्व पर अपना विचार रखना चाहूँगा, वह सौंदर्यतत्व है—'तिहाई'। विद्वानों ने 'तिहाई' को वादन का 'परमोच्च बिंदू' कहा है। एकल तबला वादन की समाप्ति सौंदर्यपूर्ण तिहाई से करना, यही तबला वादन प्रस्तुति की सही पूर्णता होगी, ऐसा मेरा विचार है। वादन प्रस्तुति का पूर्णविराम होता है—तिहाई। इसलिए 'तिहाई' का वादन प्रस्तुति में अनन्यसाधारण महत्त्व है। वादक अपने एकल प्रस्तुति में विविध रचना प्रकारों का दर्जेदार वादन करते हुए अपने कलाविष्कार का स्तर परमोच्चशिखर पर पहुँचाता है और सौंदर्यपूर्ण तिहाई से अपने वादन प्रस्तुति का सही समापन करता है। आदश एकल तबला वादन का यह उत्तम लक्षण है। एकल तबला वादन का आरंभ तथा अंत प्रभावी तरीके से होना ही, वादन प्रस्तुति की यशस्वीता होती है। संपूर्ण एकल तबला वादन को पूर्णतः सौंदर्यपूर्ण बनाने का महत्त्वपूर्ण सौंदर्यतत्व हैं—'तिहाई'। प्रस्तुत शोध विषय पर प्रकाश डालते हुए मेरे मार्गदर्शक डॉ. अजय जी अष्टपुत्रे ने अपने साक्षात्कार में कहा—

अजय अष्टपुत्रे ने अपना मत स्पष्ट करते हुए कई तथ्यों की ओर अवगत कराया और उन्होंने अपने एक लम्बे साक्षात्कार में बताया—''स्वतंत्र तबला वादन प्रस्तुति में परंपरागत प्रणाली तथा नवीन परिवर्तन के माध्यम से विचार किया जाय तो उसमें काफी बदलाव हुए है। परंपरागत वादन पद्धति में पुराने विद्वान, खाँ साहब अपने घरानों से एकनिष्ठ रहते हुए केवल पारंपारिक रचनाएँ बजाना ही पसंद करते थे। इसकी वजह भी यह थी की, उस वक्त श्रोतागण में तबले के कई विद्वान तथा गुरुजन ही अक्सर हुआ करते थे। परंपरागत प्रणाली के वादन का ही सर्वोपरि स्वागत होता था। विद्वान-गुरुजन घरानेदार पेशकार से अपना वादन शुरू करते थे, जिसमें दायाँ-बायाँ का अच्छा संतुलन और वादक का रियाज़ झलकता था। लयकारी की अपेक्षा लय अंग से, उपज से पेशकार का विस्तार होता था, जिसके परिणाम में वादक के सौंदर्यपूर्ण वादन की प्रतिभा नजर आती थी। उसी प्रकार, कायदे-रेलों की रचनाओं में भी पारंपारिक वादन पद्धति से विस्तार किया जाता था। आगे, मध्य लय में बंदिशों का वादन भी उतना ही प्रभावकारी होता था। उस्ताद थिरकवाँ, उस्ताद अमीर हुसैन खाँ तथा मेरे दादा गुरु उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब, जैसे विद्वानों के वादन में यह अनुभव देखने-सुनने मिलता था। हमें भी यह बातें मेरे गुरु प्रो. सक्सेना साहब से ही ज्ञात हुई हैं। मेरे विचार से विद्वानों का, यह घराने के अनुशासन में रहकर किया गया वादन सचमुच कलात्मक होता था, जिसका उद्देश्य केवल आनंद की प्राप्ति ही हुआ करता था। लेकिन, वर्तमान में नवीन परिवर्तन के अंतर्गत विचार किया जाए, तो इन सबका बदला हुआ रूप नजर आता है। आज प्रत्येक वादक हर घराने का तबला बजाने में दिलचस्पी रखता हुआ दिखाई देता है। वर्तमान में पेशकार वादन में लयात्मक सौंदर्य अंग की अपेक्षा लयकारी तथा गणिती खेल होता हुआ दिखाई दे रहा है, जिससे पेशकार का सच्चा आनंद हम नहीं ले पा रहे हैं। वर्तमान में, कुछ गिने-चुने कलाकारों को छोड़कर प्रत्येक कलाकार स्वतंत्र वादन करने के लिए सर्वोपरि स्वतंत्र हो गया है। अपने वादन में गुरुमुख द्वारा लिया गया ज्ञान प्रतिबिंबित होना चाहिए, ऐसा मेरा मानना है। इसके लिए, वादक ने अभ्यास करना, रियाज़ करना जरूरी है। कायदे, रेलों का सीधे रियाज़ न करते हुए पहले बोल समूहों को (अनिबद्ध रचना को) साधना चाहिए और फिर कायदे-रेलों की रचना की (निबद्ध रचना की) और उसी दृष्टि से देखना भी चाहिए। स्वतंत्र तबला वादन प्रस्तुति में हुए बदलाव के बारे में मैं कहना चाहूँगा कि, वादक ने परंपरागत रचनाओं का स्वागत करते हुए अपनी वर्तमान वादन प्रस्तुति में सज़ग तथा अभ्यासपूर्ण रहना चाहिए, तभी उसे वादन के अच्छे परिणाम दिखाई देंगे, ऐसा मेरा कहना है। परंपरागत वादन प्रणाली तथा नवीन परिवर्तन में निश्चित ही विधायक बदलाव हुए है।''[९]

इस प्रकार, हमने देखा की, एकल तबला वादन प्रस्तुति के परंपरागत प्रणाली को और विचारों को वर्तमान विद्वानों ने अपने प्रगल्भ विचारों से, सृजनशीलता से और भी अधिक सौंदर्यपूर्ण बनाया है। वर्तमान में, एकल तबला वादन प्रस्तुति का यह आधुनिक विकसनशील रूप यानी, विद्वानों द्वारा ली गई मेहनत का ही फल है। मेहनत यानी रियाज़, जिसके साथ-साथ मनन और चिंतन होना भी जरूरी है। इसलिए पं. सुरेश तलवलकर कहते हैं—कि, ''वादन का सर्वांगीण विचार वादक के रियाज़ और चिंतन से ही हो सकता है।''[१०]

सचमुच, वर्तमान एकल तबला वादन प्रस्तुति में हुआ यह विधायक परिवर्तन ही तबला वादन कला में हुई सबसे बड़ी क्रांति है, जो एकल तबला वादन प्रस्तुति का नवीन परिवर्तन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. माईणकर, सुधीर, तबला-वादन कला और शास्त्र, हिंदी अनुवाद, गांधर्व महाविद्यालय प्रकाशन, मिरज, 2000, पृ. 245.
2. साक्षात्कारः मुलगाँवकर, अरविंद, ज्येष्ठ तबला गुरु, दि. 24/11/2017., 14:50
3. दंडगे, आमोद, सर्वांगीण तबला, मराठी, भैरव प्रकाशन, कोल्हापुर, चतुर्थ संस्करण, 2017, पृ. 121.
4. मुलगाँवकर, अरविंद, तबला, मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2016, पृ. 212.
5. साक्षात्कारः माईणकर, सुधीर, ज्येष्ठ तबला गुरु, दि. 13/01/2019.
6. मुलगाँवकर, अरविंद, तबला, मराठी, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, तृतीय संस्करण, 2016, पृ. 308.
7. माईणकर, सुधीर, तबला-वादन कला और शास्त्र, हिंदी अनुवाद, गांधर्व महाविद्यालय प्रकाशन, मिरज, 2000, पृ. 203.
8. साक्षात्कारः गुलवड़ी ओंकार, ज्येष्ठ तबला वादक, दि. 17/09/2019., 14:00
9. साक्षात्कारः अष्टपुत्रे, अजय, मार्गदर्शक तथा तबला प्रोफेसर, दि. 24/09/2019, 11:00
10. तलवलकर, सुरेश, आवर्तन, मराठी, राजहंस प्रकाशन, पुणे, 2014, पृ. 57.